बाइबल टीचर

वर्ष 18 | अगस्त 2021 | अंक 9

सम्पादकीय

उद्धार की योजना में जल का महत्व

अकसर लोगों को जब उद्धार की योजना के विषय में बताया जाता है तब वह बड़े ध्यान से सुनते हैं। यीशु ने कहा था सारे संसार में जाकर सुसमाचार प्रचार करो तथा जो सुनकर अपनी बुराई से मन फिराते हैं उन्हें बपतिस्मा दो अर्थात उन्हें पानी में डुबोकर बपतिस्मा दो। यीशु ने यह बात बड़े ही अधिकार के साथ कही थी। (मत्ती 28:18)। यदि कोई उसकी आज्ञा को स्वीकार नहीं करता तो यह एक अनादर की बात होती है। आज बहुत से लोग बपतिस्मे की आज्ञा का तिरस्कार करते हैं क्योंकि उन्हें बचपन से यह सिखाया जाता है कि यह आज्ञा इतनी महत्वपूर्ण नहीं है। अधिकतर लोग यह सोचते हैं कि केवल विश्वास कर लेने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है। मनुष्य अपने आपको प्रसन्न करने को अधिक महत्व देता है। जो लोग बपतिस्में से बचना चाहते है वे परमेश्वर की आज्ञा में घटाते और बढ़ाते हैं। (प्रकाशित 22:18, 19)। बाइबल बताती है कि जो लोग उसकी आज्ञा का पालन करेंगे केवल उनका उद्धार होगा।

आज अधिकतर लोग उद्धार की योजना में जल का विरोध करते हैं परन्तु वचन कहता है कि जल के बिना उद्धार नहीं है। जिस प्रकार से जीवन के लिये जल महत्वपूर्ण है उसी प्रकार से उद्धार पाने के लिये जल बहुत जरूरी है। बाइबल में हमें कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां जल के बिना छुटकारा पाना असंभव था। हमें इन उदाहरणों से यह पता चलेगा कि यदि जल नहीं होता तो अपनी कठिनाई से छुटकारा पाना उनके लिये कठिन था। यहां जल को एक विशेष स्थान दिया गया है। आपको बड़े ही आदर से और बिना किसी संदेह के यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने जल को सामने रखकर यह आज्ञाएं दी थीं।

हम देखते हैं कि नूह को परमेश्वर ने एक बहुत बड़ी किश्ती या जहाज

बनाने के लिये कहा था। उसने परमेश्वर की आज्ञा को माना और जब जल प्रलय आया तब उस जहाज में नूह और उसका परिवार बच पाया। (उत्पत्ति 6:9, 20)। पतरस ने इस बात के विषय में (1 पतरस 3:20-21) में बताया है। जब कोई जल में जाकर बपतिस्मा लेता है तो वचन कहता है, उसका उद्धार होता है।

जब इस्त्राएली लोग लाल समुद्री की ओर बढ़ रहे थे तब फिरौन राजा की सैना उनका पीछा कर रही थी। हम पढ़ते हैं कि इस्त्राएली लोग समुद्र से किस प्रकार से पार करके सुरक्षित निकल गये थे। (1 कुरि. 10:1-2) उन लोगों ने आनाकानी नहीं की बल्कि परमेश्वर की सामर्थ को देखकर लाल समुद्र अर्थात जल से पार निकल गये और उनकी जान बच गई। इसी प्रकार से रोमियों 6:3-4 में हम पढ़ते जब कोई यीशु के साथ जल रूपी कब्र में गाड़ा जाता है, तो वह उसकी मृत्यु थी और जी उठने की समानता में जुट जाता है।

पुराने नियम में हम, एक सेनापति के विषय में पढ़ते हैं, जिसका नाम नमान था। नमान को भयंकर कोढ़ था और वह अपने कोढ़ से छुटकारा पाना चाहता था। परमेश्वर के जन ने उससे कहा था कि यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले, नमान यह सुनकर बड़ा ही क्रोधित हुआ जैसे कि आज बहुत से लोग बपतिस्मे की बात सुनकर क्रोधित हो जाते हैं। नमान ने जब तक जल में सात बार डुबकी नहीं लगाई उसका कोढ़ वैसे ही बना रहा परन्तु सातवीं बार डुबकी लेते ही वह कोढ़ से शुद्ध हो गया (2 राजा 5)। क्या यरदन के जल में कोई शक्ति थी? नहीं, शक्ति परमेश्वर की आज्ञा में थी। जब हम जल में बपतिस्मा लेते हैं हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं (प्रेरितों 22:16)।

बाइबल में हमें एक उदाहरण मिलता है। यह है एक अंधे व्यक्ति का। उसको कहा गया था यदि तू देखना चाहता है तो शीलोह के कुण्ड में जाकर आंखे धो ले। उस अंधे व्यक्ति ने यीशु की आज्ञा को माना और जाकर अपनी आंखे धो ली और वह फिर से देखने लगा। चंगाई की सामर्थ जल में नहीं थी परन्तु यीशु की आज्ञा में थी। बाइबल कहती है मन फिराओ और बपतिस्मा लो ताकि तुम्हारे पाप क्षमा हो। (प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा है। यह कोई धार्मिक विधि नहीं है। परमेश्वर ने जल को इसलिये महत्व दिया है क्योंकि इसके बिना उद्धार संभव नहीं है। यदि कोई अपने पापों से मन फिराकर यीशु को पहिनना चाहता है तो उसे बपतिस्मा लेना आवश्यक है। (गलतियों 3:27)। नया जन्म केवल जल के सम्पर्क में आकर ही संभव है। (यूहन्ना 3:375)। मसीह में एक नई सृष्टि हम तभी बनते हैं जब हम मसीह में प्रवेश करके बपतिस्मा लेते हैं। (2 कुरि. 5:17, रोमियों 6:4)। शायद बपतिस्मा लेना आपको मूर्खता की बात लगे, परन्तु आपको यह जानना चाहिए कि यह परमेश्वर की आज्ञा है। (1 कुरि. 1:18-27)।

परमेश्वर का पुत्र हमारा मुक्तिदाता है

सनी डेविड

मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि हम आज तक इस जमीन के ऊपर वर्तमान हैं। क्योंकि हम जानते हैं, कि पिछले कुछ ही समय में हजारों लोग इस दुनिया से हमेशा के लिये जा चुके हैं। वास्तव में, इस संसार में कुछ भी निश्चित नहीं है। कभी भी, कुछ भी, हो सकता है। पर एक बात हम सब जानते हैं, क्योंकि बाइबल हमें बताती है, कि जितने भी लोग अब तक संसार से जा चुके हैं उन में से अधिकतर अनन्त विनाश में गए हैं। और बहुत थोड़े ही ऐसे थे उन में से जिन्होंने अनन्त जीवन में प्रवेश किया होगा। प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था, कि, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चौड़ा है, वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:13, 14)। क्यों कहा था प्रभु यीशु ने ऐसा? इसीलिये, क्योंकि प्रभु जानता है, कि पृथ्वी पर अधिकतर लोग, परमेश्वर की इच्छा पर न चलकर स्वयं अपनी ही इच्छा पर चल रहे हैं। वह जानता है, कि जमीन पर ज्यादातर लोग उसके वचन की बातों को सुनना भी पसंद नहीं करते। और वह जानता है, कि पृथ्वी पर के लोग अपनी आत्माओं की नहीं परन्तु अपने शरीरों की ही चिंता में लगे रहते है। और वह यह भी जानता है, कि सांसारिक लोग केवल वर्तमान की ही चिंता में लगे रहते हैं। उन्हें अपने आत्मिक भविष्य की कोई चिंता नहीं है।

लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो, मित्रो क्योंकि उसे हमारी चिंता है; क्योंकि वह हमारी आत्मा के अमर और अविनाश, और भविश्य के अनन्तकाल के बारे में जानता है। परमेश्वर की बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा हुआ है, कि परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (1 कुरिन्थियों 15:57)। बाइबल कहती है, कि प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने स्वर्ग से जमीन पर इसलिये भेजा था, ताकि वह हम सब लोगों के जीवनों के लिये एक आदर्श बने। बाइबल कहती है, कि हम सब को प्रभु यीशु मसीह के जीवन के आदर्शों पर चलना चाहिए। हमें चाहिए, कि हम उसका सा स्वभाव अपने जीवनों में अपनाएं। और हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके सामने धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके क्रूस का दुख सहा था। बाइबल कहती है, कि इस कारण उस पर ध्यान करो जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। (इब्रानियों 12:1-3)।

मित्रो, मानवता के सम्मपूर्ण इतिहास में केवल एक ही ऐसा व्यक्ति हुआ है

पृथ्वी पर जिसने कभी कोई पाप नहीं किया था– और वह व्यक्ति है यीशु मसीह। वह स्वर्ग पृथ्वी पर आकर एक इंसान बना था। उसने एक साधारण मनुष्य का सा जीवन जिया था। वह हर एक बात में हमारी ही तरह परखा भी गया था। लालच और परीक्षाएं, दुख और तकलीफें, उसके सामने वैसे ही आए थे, जैसे कि हम सब के सामने आते है। झूठे दोष उस पर लगाए गए थे। उसे सताया गया था और मारा गया था। पर उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया था। इसलिये, पाप पर जीत हासिल करने के लिये वह हमारे लिये एक आदर्श है। जब भी कोई बुराई हमारे सामने आती है, तो हमें प्रभु यीशु मसीह पर ध्यान करना चाहिए, कि उसने किस तरह से बुराई करने से अपने आप को बचाए रखा था। और हमें उसके जीवन के आदर्श का पालन करना चाहिए। सो परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने यीशु मसीह को हमें एक आदर्श के रूप में दिया है। ताकि उसके जीवन के आदर्शों का पालन करके हम पाप करने से बचे रहें।

और परमेश्वर का धन्यवाद इसलिये भी हो, कि उसने यीशु मसीह को हमारे लिये इसलिये भी दिया था, ताकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करके हमें हमारे पाप के दण्ड से बचा ले। परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)। पाप सबने किया है और पाप का परिणाम है मृत्यु! अर्थात पाप के कारण हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर नरक में रहना। लेकिन, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने सारे जगत के सब लोगों को नरक में जाने से बचा लिया, क्योंकि जो दण्ड हम सब को मिलना चाहिए था, हमारे खुद के पापों के कारण, उसी दण्ड को स्वयं यीशु मसीह में होकर उसने अपने ही ऊपर ले लिया था। परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि परमेश्वर में हमसे ऐसा प्रेम रखा, कि उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने को अपने पुत्र को बलिदान कर दिया। (1 यूहन्ना 4:10)। यीशु, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये हमारे पापों के बदले में मारा गया था। उसने क्रूस पर परमेश्वर के अनुग्रह से सारी मानवता के लिये मौत का स्वाद चखा था। (इब्रानियों 2:9)।

लेकिन अगर वह ऐसा न करता; यदि परमेश्वर ऐसा न होने देता; और यदि यीशु मसीह परमेश्वर के अनुग्रह से सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर न मारा गया होता, तो आज हम में से किसी के भी पास क्या आशा होती?

हम सब जानते हैं, कि हम सब आत्मिक प्राणी है। हम सब जानते हैं, कि सबके पास अमर आत्मा है। और हम सब यह भी जानते हैं, कि हम में से हर एक को एक न एक दिन अवश्य ही मरना है। पर मरने के बाद हमारी आत्मा का क्या होगा? जो लोग मसीह के बिना जीते हैं और मर जाते हैं, उनके पास कोई आशा नहीं है। वे जानते तक नहीं, कि मरने के बाद उनकी आत्मा का क्या होगा। वे भय और आशाहीनता में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने अपने पुत्र को हमारे पापों के बदले में बलिदान करके हमें स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने की आशा दी है। प्रभु यीशु मसीह ने अपने अनुयायीओं से कहा था, कि तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास

रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और जबकि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूंगा, तो फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि जहां मैं रहूं वहीं तुम भी रहो। (यूहन्ना 14:1-3)। परमेश्वर की बाइबल का लेखक कहता है, क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। (2 कुरिन्थियों 5:1)। हम जानते हैं; क्योंकि यह वादा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने हम से किया है; जिसने स्वयं अपना बलिदान देकर हमारे पापों का प्रायश्चित किया है।

और यह प्रतिज्ञा उन सब लोगों के लिये है, जिन्होंने अपने सारे मन से परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास किया है; और जिन्होंने सब बुराई से अपना मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है; और जो लोग उसके आदर्शों पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करते है।

और, ऐसे ही आप भी अपना जीवन यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को देकर स्वर्ग के हमेशा के जीवन के हकदार बन सकते हैं।

पवित्र आत्मा से परिचय

जे. सी. चोट

अपने इस अध्ययन में हम सबसे पहले पवित्र आत्मा का परिचय देंगे। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि वह कौन है, वह कहां से आया? इस संसार में उसका कार्य क्या है तथा और भी अन्य बातों को हम देखेंगे।

सबसे पहले ईश्वरत्व में पवित्र आत्मा तीसरा व्यक्ति है। पहले परमेश्वर फिर प्रभु यीशु तथा पवित्र आत्मा। प्रभु यीशु ने जब अपने चेलों से प्रचार के लिए सारे जगत में जाने के लिए कहा था, तब उसने उन्हें आज्ञा दी थी, इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:19)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि एक परमेश्वर है, एक ही आत्मा है तथा एक ही प्रभु है (इफिसियों 4:4-6)।

रोम में मसीही लोगों को लिखते हुए वह कहता है, और हे भाइयो! मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से विनती करता हूं, कि मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो (रोमियो 15:30)। फिर 2 कुरिन्थियों 13:14 में वह इसके विषय में लिखते हुए कहता है, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। कई लोग परमेश्वर यीशु तथा पवित्र आत्मा को ट्रिनटी भी कहते है। क्योंकि ये तीन हैं। कई लोगों को यह समझना कठिन लगता है। कुछ विश्वास

करते हैं कि यह तीन परमेश्वर हैं। और कुछ लोग कहते हैं कि यीशु ही परमेश्वर है, पिता है और पवित्र आत्मा है। इस शिक्षा को जीजस ओनली जैसी शिक्षा के नाम से जाना जाता है जो कि एक झूठी शिक्षा है। यद्यपि हमारे लिये यह समझना कठिन है कि एक परमेश्वर किस प्रकार है। एक मसीह तथा एक पवित्र आत्मा है, जबकि तीन व्यक्ति है, परन्तु बाइबल हमें ऐसा सिखाती है कि ये तीनों एक हैं।

परमेश्वर, यीशु तथा पवित्र आत्मा को समझाने के लिए ट्रिनटी या त्रिएक शब्द का इस्तेमाल बाइबल में नहीं हुआ है, परन्तु यह बताया गया है कि यह ईश्वरत्व है। प्रेरित पौलुस अथेने नामक स्थान पर लोगों को बताता है, सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रुपया या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो (प्रेरितों 17:29)। जो लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते उनसे पौलुस कहता है, क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं (रोमियों 1:20)। यीशु के विषय में बोलते हुए वह कहता है, क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। ईश्वरत्व जिसे इस पद में हम देखते हैं वह पिता परमेश्वर, प्रभु यीशु तथा पवित्र आत्मा हैं

परन्तु प्रश्न यह है कि ईश्वरत्व कब से विद्यमान है? इनके विषय में हम जगत की उत्पत्ति के समय से देखते हैं अर्थात यह जगत की उत्पत्ति से पहले विद्यमान थे। ये स्वभाव में अनन्त हैं। बाइबल की पहली आयत में हम पढ़ते हैं, आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)। परमेश्वर को इब्रानी भाषा में जिस प्रकार से इस्तेमाल किया गया है, वह है, परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु तथा पवित्र आत्मा। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं (उत्पत्ति 1:26)।

दाऊद ने इस प्रकार से लिखा था, फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं, और तू धरती को नया कर देता है (भजन संहिता 104:30)। अय्यूब कहता है, मुझे ईश्वर के आत्मा ने बनाया है और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है (अय्यूब 33:4), यूहन्ना ने कहा आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। (यूहन्ना 1:1-3)। मुझे लगता है कि इन पदों से हम ईश्वरत्व के विषय में जान सकते हैं कि वे आरंभ से थे। यदि हम ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य को देखें तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक के पास एक कार्य करने को हैं और इस बात को हम पुराने तथा नये नियम में देखते है। पवित्र आत्मा ने पवित्र जनों को पवित्र शास्त्र को लिखने में अगुआई की थी पतरस ने लिखा था, कि उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसमें मैं प्रसन्न हूं। और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यह वाणी आते सुनी। और

हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अंधियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:17-21)। आप इन सारी आयतों में देख सकते हैं कि ईश्वरत्व के सारे सदस्यों का इसमें वर्णन है परन्तु विशेषकर इनमें पवित्र आत्मा का वर्णन है जिसने वचन को देने में अगुआई की है। पौलुस ने यह बात लिखकर कहा था हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिखा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

ऐसा कहा जाता है कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा का वर्णन 88 बार हुआ है तथा 18 नामों से उसके विषय में बताया गया है। नये नियम में 264 बार वर्णन हुआ है तथा 39 विभिन्न नामों से जाना जाता है। यह भी कहा जाता है कि 5 नाम इन नामों में दोनों (पुराने तथा नये) नियमों में अक्सर इस्तेमाल हुए हैं और 52 विभिन्न नाम पवित्र आत्मा के लिए इस्तेमाल हुए हैं।

पवित्र आत्मा को अक्सर अजीब सी शक्ति करके दिखाया जाता है, परन्तु बाइबल उसे एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में दिखाती है। वह शोकित या दुखी हो सकता है (इफिसियों 4:30), वह मनो का जांचने वाला है (रोमियों 8:27), वह बोलता या बातें करता है (1 तीमुथियुस 4:1), वह दुर्बलता में हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:26)।

जैसा कि आपने देखा कि पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है, परन्तु यह एक शुरूआत है। अगले अंकों में हम और बहुत कुछ देखेंगे। यदि आप मसीही नहीं हैं, तो हम आपको इस बात के लिए प्रोसाहित करेंगे कि इसके विषय में आप विचार कीजिए। अपने वचन में पवित्र आत्मा ने यह प्रकट किया है कि मसीही बनने के लिए आपको कया करना है। यानी परमेश्वर की इच्छा को सुनना है (रोमियों 10:17), परमेश्वर तथा यीशु में विश्वास करना है (यूहन्ना 14:1-3), अपने पापों से मन फिराना है (प्रेरितों 17:30), यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर सबके सामने यह अंगीकार करना है (मत्ती 10:32) तथा पानी में डुबकी का बपतिस्मा लेना है (मरकुस 16:16)। जब आप ऐसा करेंगे, तब प्रभु आपका उद्धार करेगा तथा अपनी मण्डली में आपको मिला देगा, जो उसका परिवार है अर्थात मसीह की कलीसिया (प्रेरितों 2:47)।

घर में शान्ति (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

मनुष्य और मनुष्य के बीच शान्ति

इसके अलावा परमेश्वर मनुष्य और मनुष्य के बीच शांति देता है। इस प्रकार से परमेश्वर घर में परिवार के लोगों के बीच शान्ति देता है। वह ऐसा कैसे करता है?

बाधाओं को तोड़कर

पहले तो परमेश्वर उन दीवारों को तोड़कर जो लोगों को अलग करती हैं उन में शांति लाता है। पुराने नियम के रब्बियों ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा का राज्य शांति का राज्य होगा, जिसमें भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा (यशायाह 11:6)। अन्य शब्दों में ऐसा होगा कि जहां पूर्व शत्रु मित्र बन जाएंगे। यह भविष्यवाणी नये नियम के युग में पूरी हुई, जब यीशु ने अलग अलग तरह के लोगों को अपनी कलीसिया में इकट्ठे किया। उदाहरण के लिए उसने यहूदियों और अन्य जातियों के बीच शांति या सुलह कराई। इफिसियों 2:14 के अनुसार, उसने दोनों को एक पर लिया और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी उसे ढहा दिया। इसलिए कलीसिया में हर तरह के लोग हों, जो पूर्व संबंधों के बावजूद शांति और भाईचारे से रहें। इसी प्रकार घर में मसीही लोग जिनका पालन पोषण अलग-अलग तरह से हुआ था एक-दूसरे के साथ शांति से रह सकते हैं, क्योंकि अब वे मसीह में एक है।

लोगों को शांतिप्रिय बनाकर

दूसरा परमेश्वर लोगों को मिलनसार बनाकर लोगों के बीच शांति लाता है। मनुष्य जाति के लिए युद्ध प्रेमी यानी झगड़ालु, अर्थात लड़ने को तैयार रहने वाले होने से बढ़कर कुछ भी स्वाभाविक नहीं है। परन्तु जब हम मसीह को अपने जीवन दे देते हैं, तो हम दूसरों के विरूद्ध लड़ने की इच्छा को खो देते हैं और इसके विपरीत जहां तक हो अपने पड़ोसियों के साथ शांति से रहना चुनते हैं। यीशु ने मेल कराने वालों (मत्ती 5:9) को आशीष दी और पौलुस ने लिखा, जहां तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो (रोमियों 12:18)। प्रतीकात्मक अर्थ में यीशु अपने चेलों को अपने प्रतिदिन के जीवन के कामकाज में लगने के लिए जाने पर कहता है, "अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से नष्ट किए जाएंगे" (मत्ती 26:52)। मसीही लोग बुद्धिमान लोग हैं, जिन्हें बुद्धि ऊपर से मिली है जो पहले तो पवित्र होता है, और फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपटरहित होता है। (याकूब 3:17)। जिस कारण मसीही लोग आमतौर पर एक-दूसरे को और अपने पड़ोसियों को साथ लेकर चलते है क्योंकि परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा वे मिलनसार लोग है, 'मसीह की शांति' उनके मनों में राज करती

है (कुलुस्सियों 3:15)।

इसी प्रकार घर में पवित्र आत्मा पाए हुए लोग झगड़ालू नहीं, बल्कि मिलनसार होते हैं। वे लड़ने को तैयार नहीं रहते, बल्कि वे समाधान ढूंढ़ने में लगे रहते हैं। वे निष्पक्ष और निष्कपट और मृदुभाव होते है। वे मिलनसार लोग होते हैं जिस कारण घर वह स्थान बन जाता है, जहां शांति पाई जाती है।

ढांचा देना

तीसरा परमेश्वर घर के लिए ढांचा देकर और परिवार के लोगों के लिए उस ढांचे को मानना आवश्यक बनाकर शांति लाता है। परमेश्वर अधिकार के अधीन होने की शर्त देकर मानवीय समाजों में शांति देता है। वह क्रांति नहीं देता, बल्कि मसीही लोगों को सरकारी अधिकारियों के अधीन होना सिखाता है (रोमियों 13:1-7, 1 पतरस 2:13-17)। इस कारण परमेश्वर के लोग होते हुए, सरकार के प्रति स्वेच्छा से अधीन होकर हम एक सुव्यवस्थित, शांति-प्रिय समाज में योगदान देते है। घर में भी परमेश्वर के निर्देशों को मानना चुन कर मसीही लोग मिलनसार परिवार में योगदान देते हैं।

घर के लिए परमेश्वर की योजना पति के पत्नी का सिर होने और पत्नी के लिए अपने पति के नेतृत्व के अधीन होने की है। घर के लिए परमेश्वर की योजना पति को पत्नी का सिर होने और पत्नी को अपने पति की अगुआई को मानने की मांग करती है। पौलुस ने लिखा-

क्योंकि पति-पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है, और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता हैं पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के आधीन रहें (इफिसियों 5:23, 24)।

इसके अलावा उसने कहा कि बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा मानने वाले हों (इफिसियों 6:1-3)। पति की अगुआई या अधिकार मनमाने ढंग से या कड़ाई से नहीं होना चाहिए। वचन उसे अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करने को कहता है, "जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया (इफिसियों 5:25)। जब तक कोई अपनी पत्नी से इतना प्रेम रखता है, जितना मसीह ने कलीसिया से किया, तो उसकी मुख्य चिंता उसकी भलाई ही होगी।

इसी प्रकार अपने बच्चों पर माता-पिता का अधिकार पक्षपात या कठोरता से नहीं होना चाहिए। बाइबल कहती है कि "पिता अपने बच्चों के क्रोध को न भड़काए" (इफिसियों 6:4)। पिताओं से कहा गया है, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए (कुलुस्सियों 3:21)।

घर में अधिकार वास्तविक है जिसमें पति घर का अगुआ है, पत्नी अपने पति के अधीन रहती है और बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानना आवश्यक है। परन्तु परमेश्वर द्वारा दिया गया अधिकार जिम्मेदार और प्रेम के साथ संतुलित है। अधिकार वालों के लिए नेतृत्व को जिम्मेदारी से केवल उनकी भलाई को ध्यान में रखते हुए जिनकी वे अगुआई करते हैं, आवश्यक है। जब घर में इस नमूने का पालन किया जाता है यानी जब अधिकार वाले प्रेम और जिम्मेदारी से अगुआई करते

हैं और दूसरे लोग अधीनता से उनकी मानते हैं तो घर में शांति का माहौल होता है।

स्थान के होने में और स्थान को जानने में सुरक्षा पाई जाती है। घर में यदि हर किसी को स्थान मिले और हर किसी को लगे कि उससे प्रेम किया जाता है, तो शांति चारों ओर होगी। पत्नी की भूमिका अपने पति की भूमिका वाली नहीं है, पर इसका भी महत्व उतना ही है। उसे वह स्थान दिया गया है जो उसका है यानी उसका महत्व है और उससे प्रेम किया जाता है। ऐसे प्रबंध से सुरक्षा और शांति आनी चाहिए। इसी प्रकार घर में बच्चों का भी स्थान है। उनकी भूमिका अपने माता-पिता वाली भूमिका नहीं है पर उनका महत्व है। उनसे प्रेम किया जाता है उनकी परवाह की जाती है और वे उस प्रबंध में सुरक्षा और शांति ढूंढ़ते हैं।

इसके अलावा झगड़े होने पर (जैसा कि बीच-बीच में होगा) एक ढांचा है, जिसके भीतर उन्हें सुलझाया जा सकता है। मान लीजिए कि पति और पत्नी किसी बात पर आपस में सहमत नहीं होते। पति घर का अगुआ है। क्या इसका अर्थ यह है कि वह जो चाहे कर सकता है? नहीं क्योंकि वह अपनी पत्नी से प्रेम करता है। क्या इसका अर्थ यह है कि वह जो चाहे कर सकती है क्योंकि उसका पति उससे प्रेम करता है? नहीं। क्योंकि वह भी उससे प्रेम करती है और उसके अधीन रहना चाहती है। परिवार का हर सदस्य अपने आपको दूसरों के सेवक के रूप में देखता या देखती है। इस प्रेम के कारण हर कोई दूसरे को अपने तरीके से काम करने देना चाहता है। अंत में यदि पति को परिवार की भलाई के लिए अपनी पत्नी के विरूद्ध कोई निर्णय देना हो, तो वह केवल ऐसा निर्णय बहुत सोच-विचार करके देगा। उस मामले में, पत्नी को पता होगा कि उसकी बात को निष्पक्षता से सुना गया है और उसकी बात पर ध्यान दिया जाएगा। इसके अलावा यह जानना भी शांति देने वाला है कि परमेश्वर के द्वारा ठहराए हुए प्रबंध के भीतर, किसी को इंचार्ज बनाकर उसे अंतिम निर्णय लेने की जिम्मेदारी दी जाती है।

परमेश्वर घर के लोगों में शांति लाता है। न केवल वह लोगों के बीच की बाधाओं को तोड़ता है और लोगों को मिलनसार बनाता है बल्कि वह परिवार के लिए भी ढांचा देता है। उसकी योजना को मान लिया जाए तो उसकी शांति को मानना पक्का है।

मसीह का अनुसरण करना

जॉन स्टेसी

बाइबल में इस बात पर बड़ा ही बल दिया गया है कि मसीही लोगों को चाहिए कि वे मसीह यीशु का अनुसरण करें। यीशु ने यूहन्ना 13:15 में कहा था कि, मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है वैसा ही तुम भी किया करो।

यदि हम मसीह के समान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो सबसे पहले हमें

उसके समान नम्र और दीन बनना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें घमण्डी और अभिमानी नहीं होना चाहिए, बल्कि मन में दीनता और नम्रता को रखना चाहिए। यीशु ने मत्ती 11:29 में कहा था कि मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि, मैं नम्र और मन में दीन हू और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। याकूब 4:6 में लेखक बड़े ही स्पष्ट शब्दों में यूं कहता है, कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। सो हमें चाहिए कि हम सदा नम्रता का व्यवहार रखें।

दूसरी बात हम यह सीखते हैं कि यीशु पवित्र था। पवित्र का अर्थ है, कि वह पाप और बुराई से परे था और परमेश्वर को समर्पित था। आत्मिक दृष्टिकोण से वह स्वच्छ और शुद्ध था। प्रेरितों 4:27 में लेखक यीशु को परमेश्वर का सेवक कहकर सम्बोधित करता हैं।

1 पतरस 1:15 में लेखक मसीही लोगों को शिक्षा देकर कहता है, पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल–चलन में पवित्र बनो।

किसी ने एक बार कहा था, कि किसी कमरे में यदि शेक्सपियर आ जाए तो लोग उसे देखकर खड़े हो जाएंगे, पर अगर यीशु उस जगह आ जाए तो लोग उसके सामने घुटने टेक लेंगे। यह बात यीशु की पवित्रता को वास्तव में दर्शाती है।

और अंतिम बात इस संबंध में हमें यह मिलती है कि यदि हम यीशु के समान बनना चाहते हैं, तो हमें उसी की तरह क्षमा करना भी सीखना चाहिए। यीशु ने अपने चेलों को, मत्ती 6:12 में सिखाया था कि वे प्रार्थना करके यह कहें, कि जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। लूका 23:34 में हम पढ़ते हैं कि क्रूस के ऊपर से यीशु ने अपने अपराधियों के लिये प्रार्थना करके कहा था कि, हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं हैं कि क्या कर रहे हैं।

पौलुस इफिसियों 4:32 में शिक्षा देकर कहता है कि, एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। क्षमा करने के लिये हमें सदा तैयार रहना चाहिए।

क्या आप वास्तव में मसीह का अनुसरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं?

मसीही लोग और मानवीय सरकार

(रोमियों 13:1–7)

डेविड रोपर

यीशु के समय में पाया जाने वाला प्रश्न था कि मसीही लोगों को सरकारी अधिकारियों के साथ कैसे जोड़ा जाना चाहिए। एक अवसर पर, यीशु के शत्रुओं ने उससे पूछा, क्या हमें कैसर को कर देना उचित है या नहीं? (लूका 20:22)। यहूदी

लोग रोमियों से घृणा करते थे और उन्हें कर दिए जाने को तुच्छ मानते थे, परन्तु यह प्रश्न वास्तव में एक फंदा था। यदि मसीह का उत्तर हां होता तो वह अपने यहूदी अनुयायियों से अलग हो जाता। यदि वह न कहता, तो उसके शत्रु रोमी राज्यपाल को खबर कर सकते थे (आयत 20)। यीशु ने एक सिक्का लिया और पूछा, इस पर किसकी छाप और नाम है? (आयत 21)। उन्होंने कहा, कैसर का (आयत 24ख)। फिर यीशु ने कहा, तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो (आयत 25)।

यहूदी लोग जो कैसर का है वह कैसर को देना नहीं चाहते थे। रोमियों ने उन्हें कई रियायतों के साथ अपने विश्वास को मानने की भी छूट दे रखी थी, परन्तु उनके मनों से नाराज़गी खतम नहीं हुई थी। यह घृणा बढ़ती गई जो 64 ईस्वीं के यहूदी विद्रोह का कारण बनी और बाद में 70 इस्वीं में यरूशलेम के विनाश का कारण बनी।

जब पौलुस ने 57 या 58 ईस्वी के लगभग रोम की कलीसिया के नाम पत्र लिखा था, तो यहूदी नाराजगी बहुत बढ़ चुकी थी। जैसा पहले कहा गया है, उस नगर में कलीसिया में यहूदी लोग थे (2:17), वही यहूदी जिनके मन में निस्संदेह रोमी सरकार के प्रति नाराजगी थी। रोम की कलीसिया में अन्य जातियां इस बात पर अपने यहूदी भाईयों से सहमति रखती होंगी। रोम ने कुछ साल पहले रोम यहूदियों और मसीही लोगों दोनों को निकाला था।

इन और अन्य कारणों के कारण रोम के नाम अपने पत्र में पौलुस ने इस वचन को शामिल किया गया होगा। एक और संभावित कारक यह है कि कुछ मसीही लोगों को लगा होगा कि मसीह में स्वतंत्रता (गलातियों 5:1) का अर्थ है कि अब वे व्यवस्था के अधीन नहीं है जिसमें रोम की व्यवस्था भी थी। पौलुस भी शायद वैसे सताव का ही पूर्वानुमान लगा रहा था जैसा कुछ साल बाद नीरो द्वारा हुआ, और यह कि सरकार के प्रति मसीही लोगों का व्यवहार कैसे प्रभावित होगा।

उसका मंत्र चाहे जो भी हो, पौलुस ने जिसे परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा थी, यह निर्देश शामिल करने के लिए मानवीय सरकार के साथ अनुग्रहण से उद्धार पाए व्यक्ति का संबंध कैसा होना चाहिए, आवश्यक समझा। 1 तीमुथियुस 2:1, तीतुस 3:1, और 1 पतरस 2:13, 14, 17 में भी इस विषय का उल्लेख है, परन्तु नये नियम में इस विषय पर सबसे लम्बी चर्चा रोमियों 13:1-7 वाली है। हमारे वचन पाठ में इस संबंध के हर पहलू को नहीं बताया गया है और न पूछे जा सकने वाले हर प्रश्न का उत्तर दिया गया है। तौभी ऐसे विषय पर जो हम में से हर किसी के जीवन को प्रभावित करता है यह एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है।

जब हम मसीही बन जाते हैं तो हमें अंधकार की प्रभुता से बचाकर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में लाया जाता है (कुलुस्सियों 1:13)। फिर भी हम सांसारिक राज्य/देश के नागरिक तो रहते हैं। हमें सरकारी अधिकारियों से कैसे संबंध रखना चाहिए? हमारी जिम्मेदारियां क्या हैं? परमेश्वर हम से किस तरह के नागरिक होने की इच्छा करता है? ये प्रश्न हैं जिन पर पौलुस ने रोमियों 13:1-7 में चर्चा की है।

अधिकार को पहचानें (13:1, 2, 4, 6)

वचन का आरंभ हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे (आयत 1क) को जोड़ने से होता है। इस आज्ञा तथा 13:1-7 वाली आज्ञाओं पर चर्चा करने से पहले हमें यह तय करने के लिए कि पौलुस ने यह विस्तारपूर्वक आज्ञा क्यों दी हमें इस वचन की समीक्षा करना आवश्यक है।

एक सामान्य नियम

पौलुस ने हमारे आज्ञापालन के आधार के साथ आरंभ किया, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो, और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं (आयत 1ख)। आयत 1 में अधिकारी और अधिकार शब्द जो शक्ति का इस्तेमाल करने का अधिकार का संकेत देते है। पौलुस ने कई बार स्वर्गीय जीवों की बात करने के अर्थ में इस्तेमाल किया (इफिसियों 6:12), जिस कारण कई लोग मानते हैं कि प्रेरित के मन में यहां से ऐसी बात थी। परन्तु अर्थ कहीं और मानवीय अधिकारियों के लिए है (लूका 12:11)। रोमियों 13:6, 7 में पौलुस ने इन अधिकारियों को कर देने की बात कही, सो निश्चय ही उसके मन में मानवीय सरकार थी। जे. बी. फिलिप्स के संस्करण में सिविल अधिकारी हैं, अर्थात सरकारी हाकिमों है।

यह मानते हुए कि पौलुस ने नागरिक सरकार के अर्थ में कहा, आइए आगे पढ़ते हैं- क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो, जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं (आयत 1ख) ठहराए, जिसका अर्थ क्रम में लगाना, प्रबंध करना, नियुक्त करना या ठहराना है। आयत 4 में आगे झांकते हुए हम देखते हैं कि मानवीय सरकार को दो बार परमेश्वर का सेवक कहा गया है। आयत 6 में मानवीय हाकिमों को परमेश्वर के सेवक कहा गया है। यदि आपने कभी रोमियों 13 का अध्ययन नहीं किया है तो आपको ये बातें अनोखी लग सकती हैं। परन्तु अध्याय 9 में पीछे, पौलुस ने फिरौन का विवरण देते समय सांसारिक हाकिमों पर परमेश्वर के नियंत्रण पर जोर दिया है (आयतें 16-18)।

पौलुस यह घोषणा करने वाला था कि सांसारिक हाकिम परमेश्वर की विश्वव्यापी प्रभुता के अधीन हैं, बाइबल का पहला लेखक या वक्ता नहीं था। परमेश्वर की ओर से बोलते हुए, सुलैमान ने लिखा था, मेरे ही द्वारा राजा राज करते हैं, और अधिकारी धर्म से विचार करते हैं, मेरे ही द्वारा राजा हाकिम होते हैं (नीतिवचन 8:15, 16क)। एक मूर्तिपूजक फारसी हाकिम कुस्त्रु को परमेश्वर का चरवाहा और परमेश्वर का अभिषिक्त कहा गया था (यशायाह 44:28, 45:1)। दानिय्येल ने बाबुल के राजा नबुकदनेस्सर को बताया कि परमेश्वर राजाओं का अस्त और उदय भी करता है और परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है (दानिय्येल 2:21, 4:17)। जब पिलातुस के सामने यीशु की पेशी हुई तो रोमी राज्यपाल के सामने यीशु ने बताया यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता (यूहन्ना 19:11क)।

सामान्य अवलोकन

परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई इन बातों को पढ़ने पर हमारे मनों में प्रश्नों की

बाढ़ सी आ जाती है। हम कालांतर और वर्तमान के दुष्ट हाकिमों पर चकित होते हैं। क्या परमेश्वर ने उन्हें ठहराया? क्या उनका शासन परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया था। हम उठने वाले हर सवाल का जवाब नहीं दे, सिर्फ सच्चे परमेश्वर और मानवीय सरकारों पर हम कुछ अवलोकन कर सकते हैं।

1. परमेश्वर ने मनुष्यजाति की भलाई के लिए सरकारी अधिकारी ठहराए। परमेश्वर ने घर (उत्पत्ति 3) और कलीसिया (प्रेरितों 2) को बनाया और रोमियों 13 अध्याय स्पष्ट करता है कि वह मानवीय सरकार का भी देने वाला है। उसने सरकारी अधिकार को बनाया क्योंकि लोगों को इसकी आवश्यकता है। बर्टन कॉफमैन ने लिखा है–

स्थापित अधिकार... के बिना, समस्त संसार अव्यवस्था और बर्वादी में डूब जाता। बेलगाम मानवीय स्वभाव ऐसा खूंखार जानवर है। जो जरा सा अवसर मिलने पर अपनी रस्सी तुड़वाने और संसार को खून और आतंक के नष्ट करने के लिए हमें हर समय तैयार रहने वाला, राज्य द्वारा लगाई गई बंदिश में बेचैनी और परेशानी होती है।

जैक पी. लुईस ने कहा है, सरकार का कोई भी रूप अराजकता से बेहतर है। हम इस बात पर असहमत हो सकते हैं कि कैसी सरकार सबसे बढ़िया हो सकती है और हमें इसकी कितनी अधिक या कितनी कम आवश्यकता है, पर एक बात जिस पर हम सहमत हैं वह यह है कि नागरिक अधिकार का नियम परमेश्वर का ठहराया हुआ है।

आयत 4 कहती है कि मानवीय सरकार तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। फिलिप्प के संस्करण में इस प्रकार है, अधिकारी तेरी रक्षा के लिए परमेश्वर का सेवक है। रक्षा के अलावा हमारे नगर, राज्य और राष्ट्रीय सरकारें ऐसी सेवाओं के साथ हमारी भलाई के लिए काम करती हैं, जो अपने आप पाना कठिन या असंभव होगा।

2. हर नागरिक अधिकार का अस्तित्व हैं क्योंकि परमेश्वर इसे अस्तित्व में रहने देता है। हम यह नहीं कह सकते कि किसी विशेष सांसारिक शासन के लिए परमेश्वर जिम्मेदार है, पर हम इतना कह सकते हैं कि वह शासन हैं क्योंकि परमेश्वर उसे ऐसा रहने देता है। पुराने ज़माने में तानाशाहों द्वारा अपनी प्रजा से मनमानी करते हुए उनसे अपनी बात मनवाने की कोशिश करते रोमियों 13:1–7 का दुरुपयोग हुआ था। वे यह दावा करते थे कि उनके शासन परमेश्वर की ओर से स्वीकृत है। वे रोमियों 13 से उद्धृत करते और कहते कि कलीसिया के अगुओं को उनके शैतानी कार्यक्रम को सार्वजनिक समर्थन देना चाहिए। पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार का नियम स्थापित किया, परन्तु उसने यह नहीं सिखाया कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से हर सरकारी नेता को सत्ता में बिठाता है।

इस तथ्य का कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार को स्थापित किया अर्थ क्या यह है कि वह हर सरकार को मान्यता देता है? परमेश्वर ने घर स्थापित किया। क्या इसका अर्थ यह है कि वह हर घर को मान्यता देता है? नहीं। परमेश्वर ने कलीसिया को स्थापित किया। क्या इसका अर्थ यह है कि वह हर मण्डली को मान्यता दे सकता

है? नहीं (देखें प्रकातिवाक्य 2:4, 14, 20)। इसी प्रकार हर सरकार को परमेश्वर की व्यक्तिगत स्वीकृति की मोहर नहीं मिली है।

कोई भी सरकारी अगुआ जो लोगों से आंख मूंदकर उसकी बात मानने के लिए रोमियों 13:1-7 का इस्तेमाल करता है उसे यह समझने की जरूरत है कि वचन दोधारी तलवार हैं यह उसे यह भी बताता है कि उसे परमेश्वर का सेवक होना आवश्यक है। सेवक होने की जिम्मेदारियां हैं, विशेषकर यदि सेवकाई हो। दानिय्येल 2:21 न तो यह कहता है कि परमेश्वर राजाओं का उदय करता है, बल्कि यह भी कहता है कि वह राजाओं का अस्त भी करता है। यह बात किसी हाकिम के लिए गंभीरता से विचार करने वाली होनी चाहिए।

3. परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए घृणित सरकारों का इस्तेमाल भी कर सकता है। कई जगह परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ईश्वर रहित जातियों का इस्तेमाल किया है। इस्राएल को दण्ड देने के लिए अश्शूर परमेश्वर के क्रोध का कारण सीरिया था (यशायाह 10:5)। प्रभु ने यहूदा को इसकी बुराई का दण्ड देने के लिए बाबुल का इस्तेमाल किया था (यिर्मयाह 25:9-11)। एक और सकारात्मक बात परमेश्वर ने यहूदा को दासता से छुड़ाने के लिए कुस्त्रु का इस्तेमाल किया (यशायाह 44:28-45:7, एज्रा 1:1-4)। ये उदाहरण हमें दिखाते हैं। कि परमेश्वर दुष्ट सरकारी अधिकारियों का इस्तेमाल कर सकता है और कई बार करता है। इससे आगे हम सोच नहीं सकते। हम केवल इतना जानते हैं इसी तरह परमेश्वर संसार की सरकारों पर नियंत्रण रखता है। अन्त में, उसी के उद्देश्य पूरे होंगे।

पौलुस की शिक्षाओं के बल से बचने की कोशिश करते हुए, लोग कई बार अच्छी सरकारों और बुरी सरकारों में अन्तर करने की कोशिश करते हैं। वे कहते हैं हमें केवल अच्छी सरकारों के अधीन होने की आवश्यकता है। रोमियों 13:1-7 का अध्ययन करते हुए हमें पौलुस के समय सत्ता में काबिज लोगों अर्थात रोमी साम्राज्य को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। क्या रोमी साम्राज्य अच्छी सरकार थी। कुछ पहलुओं से यह अच्छी थी पर यदि आप रोम के इतिहास से परिचित हैं, तो आपको पता है कि सरकार दुष्टता और भ्रष्टता से भरी पड़ी थी। पौलुस के लिखने के समय सम्राट नीरो था, जिसे आर. सी. बेल्ल ने मातृ घात का दोषी अमानवीय राक्षस नाम दिया है। इसके बावजूद प्रेरित ने कहा, हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर न हो (रोमियों 13:1क)।

सुझाव दिया गया है कि रोमियों 13 लिखने के समय पौलुस रोमी सरकार के प्रति पक्षपाती था क्योंकि वह एक रोमी नागरिक था और रोमी अधिकारियों द्वारा उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था। परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल लिया। ऐसा सुझाव ईश्वरीय प्रेरणा का इंकार है और तथ्यों को गलत पेश करना है। यह इस तथ्य को नजरअंदाज कर देता है कि रोमियों के नाम पत्री लिखने से पहले पौलुस को कैद में गैर कानूनी ढंग से डाला गया था और रोमी अधिकारियों द्वारा पीटा गया था (प्रेरितों 16:22-24)। वास्तव में तीन बार उसे बैंतों से मारा गया (2 कुरिन्थियों 11:25), जो दण्ड देने का रोमी तरीका था। इसके अलावा यह सुझाव इस तथ्य को

नजरअंदाज करता है कि रोमी अधिकारियों द्वारा नाजायज़ चार या इससे अधिक साल कैद में डाले जाने के बावजूद उसने ऐसे वचन लिखे जो इस प्रकार हैं।

...अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूं कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गंभीरता से जीवन बिताएं (1 तीमुथियुस 2:1, 2)।

लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और इन की आज्ञा मानें (तीतुस 3:1क)।

सताव के बीच में एक और प्रेरित ने लिखा-

प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबंध के अधीन रहो, राजा को इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों को अज्ञानता की बातों को बंद कर दो। और अपने आपको स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो। सबका आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो (1 पतरस 2:13-17)।

नये नियम का सुसंगत संदेश यह है कि मसीही व्यक्ति "अच्छा नागरिक बनने" की कोशिश करे (रोमियों 13:1) राजनैतिक शक्ति की लगाम चाहे किसी के हाथ में भी हो।

परमेश्वर का चुनाव या मनुष्य का

हॉमर गिफ़र्ड

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाने का चुनाव किया था। मनुष्य के पास यह चुनाव है कि वह मृत्यु या जीवन को चुने, या फिर बुराई या भलाई में से एक को चुनकर गलत या सही को चुने (व्यवस्थाविवरण 30:19)। यह जिम्मेदारी मनुष्य की है कि वह परमेश्वर का मार्ग चुने या अपनी इच्छा पर चले। मनुष्य को यह समझ में आ जाता है कि मनुष्य का मार्ग परमेश्वर के मार्ग से अलग है (यशायाह 55:8)। परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी इच्छा पर नहीं छोड़ा। वह अपने पगों को स्वयं नहीं चला सकता। उसे परमेश्वर की आवश्यकता होती है (यिर्मयाह 10:23)। यहोशू ने अपने समय के लोगों से कहा था, "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे" (यहोशू 24:15)।

मनुष्य के सामने सेवा करने के लिए दो मालिक हैं (मत्ती 6:24)। या तो मसीह यीशु या शैतान। मनुष्य इनमें से किसी एक की सेवा कर सकता है। परमेश्वर किसी पर यह कहने के लिए दबाव नहीं डालता कि तुम्हें किसकी सेवा करनी है। यह परमेश्वर का चुनाव है कि मनुष्य उसके पुत्र की सेवा करे, जिसे उसने उसके पापों के उद्धार के लिए इस संसार में भेजा था।

परमेश्वर ने चुनाव किया था कि वह मनुष्य को मसीह के सुसमाचार के द्वारा बचाए, जिसके विषय में प्रेरित पौलुस ने कहा था, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है, (रोमियों 1:16)। पौलुस ने यह भी कहा था, "क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे" (1 कुरिन्थियों 1:21)। इसलिए सुसमाचार का प्रचार करना आवश्यक है ताकि सबको यह सुअवसर मिल सके कि वे उद्धार पा सकें। या फिर हो सकता है कि वे सुसमाचार को न मानने का चुनाव करें। (1 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9)।

परमेश्वर ने यह चाहा कि वह अपने पुत्र के द्वारा एक कलीसिया या मण्डली बनाए (मत्ती 16:18)। यीशु इस कलीसिया का उद्धारकत्ता है (इफिसियों 5:23), और इसका सिर भी है (इफिसियों 1:22, 23, कुलुस्सियों 1:18)। आज मनुष्य यह चुनाव कर सकता है कि वह यीशु की बनाई हुई कलीसिया में रहना है या मनुष्यों के द्वारा बनाई हुई कलीसिया में? आपने क्या चुनाव किया है? आज आप किसकी कलीसिया में हैं? परमेश्वर के पुत्र यीशु द्वारा बनाई गई कलीसिया में या मनुष्यों के द्वारा बनाई गई कलीसियाओं में? यह परमेश्वर का चुनाव है कि सब मसीही लोग एकता में बने रहें (इफिसियों 1:10; 12:20; यूहन्ना 17:20-21)। मनुष्य का चुनाव यह है कि वह अपनी कलीसिया बनाए तथा अपनी शिक्षाओं को सिखाएं और ऐसा करके वे यीशु की कलीसिया को मिटाना चाहते हैं (मत्ती 15:9)। शैतान आरंभ से ही परमेश्वर की प्रत्येक बात का विरोध करता रहा है। उसके पास अपने झूठे प्रचारक, शिक्षक, अपोस्टल तथा बाइबल को गलत ढंग से सिखाने वाले लोग हैं (2 कुरिन्थियों 11:13-15)। मनुष्य के पास यह चुनाव है कि वह प्रभु की कलीसिया में हो या मनुष्यों द्वारा बनाई गई कलीसियाओं में।

मेरे मित्र! आपका चुनाव आज क्या है? यीशु की कलीसिया या मनुष्य की? यीशु की शिक्षा या मनुष्य की शिक्षा? एकता में रहने का चुनाव या फूट फैलाने का चुनाव? धोखा मत खाइए? चुनाव आपका है।

आप किधर मुड़ते हैं

रस विक्कल

परेशानी और परीक्षा की घड़ी में हम किस ओर मुड़ते हैं, हमारे स्वभाव पर निर्भर करता है? इससे पता चलता है कि हम वास्तव में क्या हैं और हमारे मन में क्या है। इस पर विचार करें। हम उन युवाओं को जो परेशानी में होते हैं, देखतें हैं कि वे बंदूकों, गैंगों और नशों की ओर मुंह कर लेते है। व्यस्कों को देखते हैं जो शराब और नशों की ओर, अवैध संबंधों की ओर मुड़ते हैं।

हम किधर मुड़ते हैं? हमारे संबंधों में जब कोई समस्या आ जाती है तो हम किधर मुड़ते हैं? क्या हम सहायता और दिशा के लिए अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं? अपने जीवनों में उसकी समझ के लिए हम बाइबल की ओर मुड़ते

हैं? परीक्षा या पाप से लड़ते हुए हम किधर मुड़ते हैं? हम अपने प्रभु यीशु मसीह की ओर मुड़ते हैं जो हमारा मालिक है और जो हमारे मन फिराकर अपने पापों को मान लेने पर हमें क्षमा करने को तैयार है। हम अपने प्रभु यीशु की ओर मुड़ते हैं जो हमें अपनी सामर्थ की शक्ति से बल दे सकता है। सहायता के लिए हम पवित्र शास्त्र की ओर मुड़ते हैं जो हमें निराश नहीं करेगा। या हम संसार के अंधकार की ओर मुड़ते हैं कि हमें स्थिर करके हमारी सहायता करे। क्या हम उस मार्ग में चले जाते हैं जो मृत्यु और विनाश की ओर ले जाता है?

1 पतरस 5:10 में हम पढ़ते हैं, अब परमेश्वर सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। हम देखते हैं कि परेशानी और परीक्षा के समय में हम किधर मुड़ सकते हैं। हमें परमेश्वर की ओर देखना आवश्यक है जो हम पर अनुग्रह करता है और हमें याद रखना आवश्यक है कि उसने हमें सुसमाचार के संदेश के द्वारा बुलाया है। हमें ऊपर की ओर देखते हुए उस प्रतिफल यानी आने वाली उस महिमा को देखना है जो हमारी बाट जो रही है। हमें अपने अन्दर झांककर देखना है कि कठिन समयों के द्वारा परमेश्वर हमें किस प्रकार से अपने मार्ग पर चलने के लिए तैयार कर रहा होता है। वह हमें जीवन के संघर्षो का सामना करने के लिए तैयार करता है।

संसार में हम परेशानी में हो सकते है। सहायता के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ें। जीवन की चुनौतियां हमें तोड़ने के लिए नहीं बल्कि पिता की ओर झुकाने के लिए हैं। परमेश्वर सबको आशीषित करे।

पिन्तेकुस्त के दिन मसीह के राज्य की स्थापना

जिम ई. वॉलड्रन

भाग १

लूका द्वारा, ईश्वरीय प्रेरणा से लिखे ऐतिहासिक वर्णन को पढ़कर उसके द्वारा लिखी नए नियम की दूसरी पुस्तक के परिचय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> “हे थियुफिलुस, मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरंभ से करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। उसने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।” (प्रेरितों. 1:1-3)।

यूहन्ना ने (मत्ती 3:2) और यीशु ने (मत्ती 4:17) पृथ्वी पर रहकर न केवल यही प्रचार किया था कि राज्य शीघ्र ही आनेवाला है; परन्तु अपने चेलों से यीशु ने यह भी कहा था:

“मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं कि जब

तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।" (लूका 9:27)।

वे लोग जो ऐसा मानते और सिखाते हैं कि मसीह का राज्य अभी तक नहीं आया है, और वह राज्य, जिसमें पृथ्वी पर आकर यीशु मसीह "एक हज़ार वर्ष" तक राज्य करेंगे, किसी समय भविष्य में आनेवाला है, वे वास्तव में यीशु के इस कथन का खुल्लम-खुल्ला मज़ाक उड़ा रहे हैं, जैसे कि उन्होंने अपने चेलों से उस समय कहा था कि, **"मैं तुमसे सच कहता हूं,** कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।" (लूका 9:27), अर्थात यीशु ने उनसे कहा था, कि उसका राज्य उनके जीवनकाल में ही आ जाएगा।

और जैसे यीशु ने कहा था, **यह वास्तव में सच था,** क्योंकि जिस प्रकार हम देखेंगे कि मसीह और परमेश्वर का राज्य (इफिसियों 5:5) यीशु मसीह के जी उठने के बाद जो पहला पिन्तेकुस्त का दिन आया था उस दिन, उसके स्वर्ग पर उठा लिये जाने के दस दिन के बाद स्थापित हो गया था और वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर राजाओं का राजा बनकर राज्य करने लगा था; क्योंकि वही **यहूदा के गोत्र का सिंह** था।

जैसे कि हमने प्रेरितों 1:1-3 में देखा था, कि जब यीशु जी उठे थे तो स्वर्ग पर जाने से पहले वे चालीस दिनों तक पृथ्वी पर रहकर अपने प्रेरितों को राज्य के बारे में सिखा रहे थे। और फिर यह भी हमने पढ़ा था (मरकुस 9:1) कि यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा था कि उनमें कुछ ऐसे हैं कि वे "जब तक परमेश्वर के राज्य को **सामर्थ्य सहित** आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।"

और स्वर्ग में वापस प्रवेश करने से पहले, लिखा है, यीशु ने उन्हें यह भी बताया था कि सामर्थ्य कब और किस प्रकार प्रकट होगी, यीशु ने उनसे कहा था:

> "क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों. 1:5-8)।

फिर हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।" (प्रेरितों 1:9)।

जब यीशु इस पृथ्वी पर थे तो उन्होंने प्रत्येक पाप और बुराई का सामना करके शैतान पर विजय प्राप्त की थी, जैसे कि लिखा है, कि "वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों 4:15)। फिर लिखा है, कि क्रूस पर उसकी मृत्यु के बाद उसे गाड़ा गया था। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से वह फिर जी उठा था। (मत्ती 27:59; 28:5)। इसलिये मसीही लोगों का यह विश्वास है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने पृथ्वी पर पाप और मृत्यु पर और कब्र और अधोलोक पर विजय प्राप्त की थी, और वे स्वर्ग में वापस चले गए थे, जहाँ उन्हें एक विजयी प्रतापी राजा के रूप में स्वीकारा गया था:

"हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो। हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ! क्योंकि

प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। वह प्रतापी राजा कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! हे फाटको अपने सिर ऊंचे करो! हे सनातन के द्वारो, तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा! वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।" (भजन संहिता 24:7-10)।

प्रभु यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के लगभग 500 वर्ष पूर्व भविष्यवक्ता दानिय्येल को एक स्वप्न दिखाया गया था जिसमें उसने प्रभु महान को बादलों समेत आते स्वर्ग में देखा था, उसने लिखकर इस प्रकार कहा था:

"मैंने रात में स्वप्न देखा, और देखो, मनुष्य के संतान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुत्ता महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुत्ता सदा तक अटल और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।" (दानिय्येल 7:13-14)।

इसी भविष्यवाणी के पूरा होने को ध्यान में रखकर लूका ने प्रेरितों 1:4 में लिखकर कहा था, कि पिन्तेकुस्त के दिन के दस दिन पहले, स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये यीशु बादलों समेत ऊपर उठा लिये गए थे, जहाँ सर्वअधिकार प्राप्त करके वे परमेश्वर के दाहिने पर बैठकर राज्य करने लगे थे। वास्तव में यही वह संदेश था जिसे प्रेरित पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन लोगों को दिया था जिसका वर्णन हमें प्रेरितों के कामों की पुस्तक के 2 अध्याय में इस प्रकार मिलता है:

"जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इक्ट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं। और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" (प्रेरितों 2:1-4)।

यहाँ "सब" का तात्पर्य प्रेरितों से है, क्योंकि यहाँ बात उन्हीं की हो रही है जैसे कि पहले अध्याय के अंतिम पद से विदित है, और उन्हीं के बारे में लिखा है, कि वे सब पवित्र आत्मा से भर गए। यह बात इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाती है कि उस भीड़ में सभी लोग प्रेरितों को ही सम्बोधित करके उनसे बातें कर रहे थे, जैसे कि 14, 37, 42 और 43 पदों से स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

प्रेरितों 2:14 से पढ़कर हम देखते हैं कि प्रेरित पतरस ने उनके प्रश्न का उत्तर देकर उनसे क्या कहा था,

"तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो यह जान लो, और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई थी: परमेश्वर कहता है, कि अंत के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी

करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।" (प्रेरितों 2:14-17)।

यहाँ से पढ़कर हमें यह भी पता चलता है कि पिन्तेकुस्त के उस दिन जब प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा आया था तभी से "अन्त के दिनों" का आरंभ हो गया था। इब्रानियों की पत्री का लेखक भी इस बात की पुष्टि यह कहकर करता है:

"पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।" (इब्रानियों 1:1-2)। और फिर लिखा है कि, "नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार-बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।" (इब्रानियों 9:26)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "हज़ार वर्ष" का वर्णन चिन्हात्मक रूप से सुसमाचार के युग के लिये किया गया है। उसका तात्पर्य वास्तविक समय से नहीं है; पर प्रतीकात्मक रूप में किया गया है, ठीक उसी तरह से जैसे कि हम वहाँ, अथाह-कुंड, जंज़ीर और अजगर के बारे में पढ़ते हैं। इसका विस्तार से विवरण लेखक ने प्रकाशितवाक्य की टीका में 20 अध्याय पर व्याख्या करके समझाया है।

पिन्तेकुस्त यहूदियों का एक दिवसीय वार्षिक त्योहार होता था, जिसे वे सप्ताहों का पर्व कहते थे। (निर्गमन 34:22)। यह हमेशा सप्ताह के पहले दिन आता था। प्रेरितों 2 अध्याय में हमें जिस पिन्तेकुस्त के बारे में मिलता है वह यीशु मसीह के जी उठने के पचास दिन बाद और उनके स्वर्गारोहण के दस दिन पश्चात् आया था।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के 2 अध्याय में 22 पद से आरंभ करके हम इस प्रकार पढ़ते हैं, पतरस ने उनसे कहा था:

"हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुमने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों 2:22-24)।

ये शब्द वास्तव में दाऊद के एक भजन से लिये गए थे (16:10) जहाँ भविष्यवाणी करके उसने यीशु के मुर्दों में से जी उठने के बारे में यूं कहा था:

"क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा।" (प्रेरितों 2:27)।

फिर बाइबल का लेखक आगे इस प्रकार हमें बताता है, कि पतरस ने उन लोगों से कहा था कि:

"हे भाइयो, मैं कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूं, कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे

यहाँ विद्यमान है। वह भविष्यवक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा; उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने पाई।" (प्रेरितों. 2:29-31)। फिर उसने आगे यूं कहा था कि,

"इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूं। अत: अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" (प्रेरितों 2:32-36)।

प्रेरित ने यह प्रवचन वास्तव में बड़े ही प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करके उन लोगों को समझाया था, कि किस प्रकार बाइबल के पुराने नियम में इन बातों के बारे में पहले ही से लिखा हुआ था, अर्थात् मसीह के बारे में कि वह मारा जाएगा, गाड़ा जाएगा और परमेश्वर की सामर्थ्य से फिर जी उठेगा और वह जी उठने के बाद परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर राज्य करेगा, और इसलिये अब परमेश्वर ने उसे प्रभु (शासक) और मसीह भी ठहराया है।

पतरस की ये बातें सुनकर, लिखा है, उन इस्राएली लोगों के मनों पर बहुत बड़ा असर हुआ था, और परिणाम स्वरूप हम पढ़ते हैं:

"तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?" " (प्रेरितों 2:37)।

परमेश्वर किस बात से प्रसन्न होता है?

सूज़ी फ्रैड्रिक

मनुष्य जाति का इतिहास हमें बहुत से ऐसे उदाहरणों के विषय में बताता है जब लोगों ने परमेश्वर को प्रसन्न करने के बहुत से प्रयास किये थे। कुछ लोगों को इस बात में सफलता मिली थी परन्तु कुछ लोग उसे प्रसन्न करने में असफल रहे थे।

संसार की सृष्टि होने के पश्चात, दो भाईयों ने परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये उसे अपने-अपने बलिदान दिये। एक भाई जिसका नाम हाबिल था उसने अपने बलिदान से परमेश्वर को प्रसन्न किया, परन्तु दूसरे भाई के बलिदान से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ (उत्पत्ति 4:3-5)।

इसके कई वर्षों के पश्चात् परमेश्वर ने एक जल प्रलय भेज कर पृथ्वी पर लोगों को नष्ट कर दिया था, तथा एक धर्मी व्यक्ति नूह तथा उसका परिवार इस जल-प्रलय से बच पाये थे। नूह ने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन बिताया था। (उत्पत्ति 6:7-8)।

इस्त्राएलियों का राजा शाऊल जिसने युद्ध करके अमालेकियों को हराया था जो परमेश्वर के शत्रु थे। परन्तु शाऊल तथा उसकी सेना ने अमालेकियो के अच्छे-अच्छे पशुओं को रख लिया यह सोचकर कि इन्हें हम परमेश्वर को बलिदान करके चढ़ायेगें। लेकिन परमेश्वर इस बलिदान से इतना अप्रसन्न हुआ कि उसने शाऊल के हाथ से राज्य वापस ले लिया। (1 शमुएल 15:28)।

राजा दाऊद के राज्यकाल में, परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहने वाले अबीनादाब के घर से निकाला और गाड़ी हांकने वालों में से एक ने जिसका नाम उज्जा था अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। परन्तु परमेश्वर इससे अप्रसन्न हुआ और उसका कोप उज्जा पर भड़का, और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया। (2 शमुएल 6:3-7)।

यीशु ने जब पृथ्वी पर कलीसिया (चर्च) की स्थापना कर दी, तब उसकी कलीसिया के लोग आपस में मिलकर रहने लगे, और उनकी वस्तुएं आपस में सांझे की थी तथा जिनके पास जमीन-ज़यदाद थी वो उसे बेचकर उससे मिलने वाले पैसे को प्रेरितों को दे देते थे ताकि जिसे जैसी आवश्यकता हो उसे दे दिया जाये। एक पति पत्नी ने भी जिनका नाम हनन्याह और सफ़ीरा था कुछ भूमि बेची परन्तु उसके दाम में से कुछ अपने पास रख लिया और इस बात से परमेश्वर बहुत अप्रसन्न हुआ। जब उन्होंने एक भाग लाकर प्रेरितों के पावों के आगे रख दिया तब प्रेरित पतरस यह जान गया कि उन दोनों ने प्रेरितों से झूठ बोला है और दोनों वहीं प्रेरितों के सामने मर गये। (प्रेरितों 4:34; 5:10)।

अभी जबकि मसीह की कलीसिया की शुरूआत ही हुई थी, कुछ यहूदी लोग मसीहीयों को सताने लगे। इनमें से एक यहुदी का नाम शाऊल था जो कि तरसुस शहर का रहने वाला था। वह लोगों के घरों में घुसकर उन्हें पकड़कर जेलखाने में डलवा देता था (प्रेरितों 8:3)। वह ऐसा विश्वास करता था कि यह सब वह परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये कर रहा है या उसकी इच्छा को पूरा कर रहा है। परन्तु प्रभु यीशु ने शाऊल से सीधे बात की और उससे कहा कि वह अपने मार्ग को बदले तथा मसीहियों को सताना बन्द करे। हम पढ़ते हैं कि तीन दिन तक शाऊल अन्धा रहा (प्रेरितों 9:1-9)।

जब इन उदाहरणों को हम देखते हैं, तब हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि क्या यह जानना सम्भव है कि परमेश्वर को किस प्रकार से प्रसन्न किया जा सकता है? हम शायद अपने इन्सानी दिमाग़ से ऐसा विचार करें या सोचें कि परमेश्वर को इन लोगों से प्रसन्न होना चाहिए था। शायद इन लोगों ने भी ऐसा ही सोचा होगा कि उनसे परमेश्वर प्रसन्न होगा। परन्तु हम किस प्रकार से जान सकते हैं कि परमेश्वर कैसे प्रसन्न होगा?

हम जानते हैं कि जब हम, परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तब हम उसे प्रसन्न करते हैं। (यिर्मयाह 7:23; 1 शमुएल 15:22; प्रेरितों 5:29)। इस बात को ध्यान में रखकर आईये कुछ उदाहरणों को फिर से देखें: हाबिल के बलिदान से परमेश्वर इसलिये प्रसन्न हुआ क्योंकि यह उसकी आज्ञा अनुसार दिया गया था। यह विश्वास

के द्वारा चढ़ाया गया बलिदान था। (इब्रानियों 11:4), और विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)।

नूह तथा उसका परिवार जल प्रलय से इसलिये बच पाये क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को माना था। परमेश्वर की इच्छा अनुसार नूह ने अपने और अपने परिवार के लिये पानी का जहाज़ बनाया था (इब्रानियों 11:7)।

राजा शाऊल ने अमालेकियों के यहां से अच्छे-अच्छे पशुओं को लाकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा। परमेश्वर ने शाऊल को साफ़-साफ़ बता दिया था, वहां जाकर सब कुछ नाश कर देना परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। (1 शमुएल 15:3)।

जब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाया, तब वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा था। उज्जा उन लोगों में से नहीं था जिन्हें परमेश्वर के सन्दूक को उठाने का अधिकार दिया गया था और परमेश्वर ने उस सन्दूक को छूने तक के लिये भी मना किया था। (गिनती 4:15; 2 शमुएल 6:6-7)।

हनन्याह और सफ़ीरा ने प्रभु द्वारा दी गई सज़ा से प्राणों को छोड़ दिया और वे मर गए इसलिये नहीं क्योंकि उन्होंने भूमि बेचकर उस पैसे से आवश्यकता से पीड़ित लोगों की सहायता करनी चाही थी, परन्तु वे प्रभु द्वारा इसलिये दण्डित किये गये क्योंकि उन्होंने झूठ बोला था, और उनका झूठ यह था कि सारी भूमि बेचकर सारा पैसा वे नहीं दे रहे थे। उन्होंने उसमें से कुछ पैसा अपने लिये रख लिया था। (नीतिवचन 6:16-19; लूका 18:20; मत्ती 12:37)।

जब तरसुस के शाऊल को पता चला कि वह परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं कर रहा है तो उसने तुरन्त अपने जीवन को बदला तथा परमेश्वर की आज्ञा को मानने लगा। अपना सारा जीवन उसने प्रभु की सेवा में लगा दिया। (प्रेरितों 9:1-30; 2 तीमु. 4:6-8)।

अनेकों लोग परमेश्वर को प्रसन्न तो करना चाहते हैं, परन्तु इस बात का बाइबल से अध्ययन नहीं करते कि वह किस बात से प्रसन्न होगा। जो उन्हें अच्छा लगता है, उससे वे परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। परमेश्वर के लिये उनके अन्दर जोश तो है, परन्तु बिना किसी ज्ञान के। ''क्योंकि ऐसे लोग परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन न हुए।'' (रोमियों 10:2-3)। आईये परमेश्वर के वचन बाइबल का अध्ययन करें और सीखें कि परमेश्वर को किस प्रकार से प्रसन्न किया जा सकता है।

हम परमेश्वर को उसकी आज्ञाएं मानकर प्रसन्न कर सकते हैं। उसने अपने वचन में कहा है कि, उद्धार पाने के लिये हमें उसमें विश्वास करना है तथा बपतिस्मा लेना हैं (मरकुस 16:16); हमें अपने पापों से मन फिराना है। (लूका 13:3; प्रेरितों 2:38)। यदि हम उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते तो हम उसे प्रसन्न नहीं कर रहे हैं। यीशु ने कहा था, ''यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' (यूहन्ना 14:15)। क्या आज आप अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न कर रही हैं?